70

ज़्या दिन है!

बाइबल पाठ #29

VII. यीशु की सेवकाई का अन्तिम सप्ताह (क्रमश:)।

ड. मंगलवार: ''प्रश्नों का बड़ा दिन'' (क्रमश:)।

2. अधिकार पर प्रश्न:

क. प्रश्न और यीशु का उत्तर (मत्ती 21:23-27; मरकुस 11:27-33; लूका 20:1-8)।

ख. उसके उत्तर का भाग: तीन दृष्टांत।

(1) दो पुत्रों का दृष्टांत (मत्ती 21:28-32)।

(2) दुष्ट किसानों का दृष्टांत (मत्ती 21:33-46; मरकुस 12:1-12; लूका 20:9-19)।

(3) राजा के पुत्र के विवाह के भोज का दृष्टांत (मत्ती 22:1-14)।

3. एक के बाद एक प्रश्न:

क. फरीसी और हेरोदेसी कर देने सम्बन्धी प्रश्न पूछते हैं (मत्ती 22:15-22; मरकुस 12:13-17; लूका 20:20-26)।

परिचय

किसी के लिए कोई दिन ऐसा होता है, जिसमें परिवर्तन बिल्कुल उसकी इच्छानुसार होता है। सुबह उठते ही उसे बड़ा अच्छा लगता है। उसका बॉस उसके प्रयासों के लिए उसे शाबाशी और तरक्की देता है। उसके बच्चे घर आने पर उसे गले लगाते हैं। उसकी पत्नी चुम्बन के साथ उसे राहत देती और उसका मन पसन्द खाना बनाती है। कोई मित्र, जिसका ध्यान भी नहीं था, कर्ज़ लौटाने के लिए आ जाता है। उस रात बिस्तर पर, वह मुस्कुराता हुआ सोचता है, ''क्या दिन था!'' उसके पड़ोसी का दिन ऐसा नहीं बीतता: उसे सुबह से ही सिर दर्द शुरू हो जाता है। दाढ़ी बनाते हुए उसे ब्लेड का कट लग जाता है। काम से लेट हो जाता है और उसका बॉस सारा दिन उसे डांटता रहता है। घर आने पर उसकी झगड़ालू पत्नी, चिल्लाते हुए बच्चे और न चुकाए गए बिल उसका स्वागत करते हैं। सबके बाद उसका कुत्ता उसे काट लेता है। रात को बिस्तर पर लेटे हुए, वह आह भरता हुआ कहता है, ''*क्या* दिन है!''[1]

हम यीशु के जीवन के एक व्यस्ततम,[2] कठोरतम और सबसे महत्वपूर्ण दिन अर्थात

उसकी सेवकाई के अन्तिम सप्ताह वाले मंगलवार का अध्ययन कर रहे हैं।[3] यह शिक्षा का दिन,[4] प्रश्नों का दिन, झगड़े का दिन और ठुकराए जाने का दिन था। दिन के अन्त में, मसीह कुछ हद तक सन्तुष्ट होकर कह सकता होगा, ''क्या दिन है!'' दूसरी ओर, उसके परेशान शत्रु केवल आहें भरते हुए कह सकते थे ''*क्या* दिन है।''

पिछले पाठ में सूखे अंजीर के पेड़ की कहानी के साथ दिन का आरम्भ हुआ था। इस अध्ययन के आरम्भ में, यीशु अन्तिम बार फसह के पर्व के लिए इकट्ठी होने वाली भीड़ को सिखाते हुए (मत्ती 21:23; मरकुस 11:27; लूका 20:1) मन्दिर में था। यह पाठ उस दिन सिखाई जाने वाली कुछ सच्चाइयों पर केन्द्रित है।[5]

अधिकार पर सबक
(मत्ती 21:23-27; मरकुस 11:27-33; लूका 20:1-8)

मसीह जब ''मन्दिर में[6] लोगों को उपदेश देता और सुसमाचार सुना रहा था,[7] तो महायाजक और शास्त्री, पुरनियों के साथ उसके पास आकर खड़े हुए'' (लूका 20:1)। ''महायाजक,'' ''शास्त्री'' और ''पुरनिये'' महासभा के प्रतिनिधि थे। यह यहूदी सभा का प्रतिनिधिमण्डल था, जिसने यह घोषणा की थी कि यीशु को मार डाला जाए (यूहन्ना 11:47-53, 57)।

प्रश्न

उन्होंने उससे पूछा, ''तू ये काम किस के अधिकार से करता है? और तुझे यह अधिकार किस ने दिया?'' (मत्ती 21:23; देखें मरकुस 11:27, 28; लूका 20:2)। ''ये काम'' मन्दिर में उसकी शिक्षा भी होगी, क्योंकि वह आधिकारिक तौर पर रब्बी नहीं था। उनके मन में उसके द्वारा इससे पहले दिन मन्दिर को शुद्ध करने और शायद इससे भी दो दिन पहले हल्ला मचाने की बात भी होगी।[8]

अधिकारियों ने अपने अधिकार में रहते हुए ऐसा प्रश्न पूछा था; उन्हें मन्दिर के सभी मामलों पर अधिकार था। इसके अलावा यह एक वैध प्रश्न था; धार्मिक चर्चाओं में पहला काम अपना अधिकार बताना ही होता है। दुर्भाग्यवश उन्होंने यह प्रश्न सच्चाइयों को जानने के लिए नहीं पूछा था, बल्कि उनका उद्देश्य तो यीशु को लोगों के सामने ''उन मामलों में टांग अड़ाने वाले एक अनधिकृत व्यक्ति के रूप में पेश करना था, जिन पर उनका विशेष नियन्त्रण था।''[9]

मसीह का अधिकार मनुष्यों की ओर से नहीं, बल्कि परमेश्वर की ओर से था (मत्ती 17:5; 28:18; इब्रानियों 1:1, 2); परन्तु प्रश्न पूछने वालों की यह जानने में कोई दिचलस्पी नहीं थी। यीशु ने तीन साल तक अनगिनत चिह्न दिखाकर, जिनका इनकार नहीं किया जा सकता था, अपने मसीहा होने को साबित किया था, परन्तु उन्होंने उन प्रमाणों को महत्व न देने का फैसला कर लिया था। इसके अलावा यदि वह और भी प्रमाण दे देता तो उन्होंने विश्वास नहीं करना था। प्रभु यह सब जानता था। इसलिए उसने उनके प्रश्न का उत्तर एक

प्रश्न के साथ देने का फैसला कर लिया, जो ऐसा प्रश्न था कि यदि वे ईमानदारी से उसका उत्तर देते, तो उसी से उनके मूल प्रश्न का उत्तर मिल जाता।

उत्तर

उसने कहा, ''मैं भी तुम से एक बात पूछता हूं; यदि वह मुझे बताओगे, तो मैं भी तुम्हें बताऊंगा; कि ये काम किस अधिकार से करता हूं। यूहन्ना का बपतिस्मा कहां से था? स्वर्ग की ओर से या मनुष्यों की ओर से?'' (मत्ती 21:24, 25क)। यदि वे मान लेते कि यूहन्ना का बपतिस्मा स्वर्ग की ओर से था, तो इसका अर्थ था कि यूहन्ना परमेश्वर की ओर से भेजा गया था और उसकी शिक्षा सच थी। उस शिक्षा में यीशु की गवाही भी थी: ''देखो, यह परमेश्वर का मेमना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है!'' ''... यही परमेश्वर का पुत्र है'' (यूहन्ना 1:29, 34)।[10] इस प्रकार यदि वे यूहन्ना के अधिकार को मान लेते, तो उन्हें यीशु के अधिकार को भी मानना आवश्यक था।

मसीह के उत्तर ने अधिकारियों को चक्कर में डाल दिया। जल्दबाजी में उन्होंने एक सभा बुलाई।

> तब वे आपस में कहने लगे, कि यदि हम कहें स्वर्ग की ओर से, तो वह कहेगा; फिर तुम ने उसकी प्रतीति क्यों न की? और यदि हम कहें, मनुष्यों की ओर से, तो सब लोग हमें पत्थरवाह करेंगे, क्योंकि वे सचमुच जानते हैं, कि यूहन्ना भविष्यवक्ता था (लूका 20:5, 6)।

वे दुविधा में पड़ गए थे: उन्हें यह मानना आवश्यक था कि यूहन्ना ने यीशु के बारे में सही कहा था, वरना भीड़ को अपने विरुद्ध करने का जोखिम था। उन्होंने ''*सही* उत्तर क्या है?'' पर चर्चा नहीं की, क्योंकि उनकी दिलचस्पी तो ''*काम चलाऊ* उत्तर क्या है?'' में थी।

परेशान होकर वे यीशु के पास आकर कहने लगे, ''हम नहीं जानते'' (मत्ती 21:27क) इसका और सही उत्तर हो सकता था, ''हम उत्तर नहीं देना चाहते,'' परन्तु यथार्थता उन की सामर्थ नहीं थी। यीशु ने उत्तर दिया, ''तो मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि ये काम किस अधिकार से करता हूं'' (मत्ती 21:27ख)। किसी ने अवलोकन किया है कि ईमानदार लोगों के साथ पेश आने में इतनी कठिनाई नहीं होती, जितनी बेईमान लोगों के साथ होती है।

पुत्रत्व का सबक (मत्ती 21:28-32; मरकुस 12:1)

अपने आलोचकों को थोड़ी देर चुप कराने के बाद, यीशु ''दृष्टांत में उन [अगुओं व भीड़ दोनों] से बातें करने लगा'' (मरकुस 12:1क)। एक के बाद एक तीन कहानियां बताई गई हैं,[11] तीनों में यहूदी पुरोहिततंत्र के मनों को दिखाया गया था। उन्होंने *उसके* अधिकार के बारे में पूछा था। अब उसने प्रकट किया कि, परमेश्वर की वाचा के लोगों के प्रतिनिधियों और अगुओं के रूप में, उन्होंने *अपने* अधिकार का दुरुपयोग किया था।

मरकुस का वृत्तांत इन कहानियों को ''दृष्टांत'' कहता है (मरकुस 12:1), परन्तु ये दृष्टांत के मापदण्ड पर खरी नहीं उतरतीं। उदाहरण के लिए साधारणतया दृष्टांत में एक बात की ओर ध्यान दिया जाता है: परन्तु ये तीनों कहानियां अलग-अलग रूपक हैं। कई और समानताएं भी बनाई जा सकती हैं और कई प्रासंगिकताएं इन विवरणों से बनाई गई हैं।[12] परन्तु हमें ध्यान रखना चाहिए कि हर कहानी का ''कुछ अर्थ'' निकालने के लिए *बारीकी* में जाने की कोशिश न करें।

प्रश्न

मसीह ने आरम्भ किया, ''तुम क्या समझते हो?'' (मत्ती 21:28क)। फिर उसने सूचित किया कि शीघ्र ही वह एक प्रश्न पूछेगा, सो उन्हें ध्यान से सुनना चाहिए। जो कहानी उसने जोड़ी, वह बड़ी सरल थी:

> किसी मनुष्य के दो पुत्र थे; उस ने पहिले के पास जाकर कहा; हे पुत्र, आज दाख की बारी में काम कर। उसने उत्तर दिया, मैं नहीं जाऊंगा, परन्तु पीछे पछता कर गया। फिर दूसरे के पास जाकर ऐसा ही कहा, उस ने उत्तर दिया, जी हां जाता हूं, परन्तु नहीं गया (मत्ती 21:28ख-30)।[13]

यीशु ने अपने शत्रुओं की ओर मुड़कर[14] पूछा, ''इन दोनों में से किस ने पिता की इच्छा पूरी की?'' (मत्ती 21:31क)।

उत्तर

उन्होंने राहत की सांस ली होगी; यही तो प्रश्न था, जिसका वे उत्तर दे *सकते* थे। उन्होंने बिना यह अहसास किए कि वे अपने ही उत्तर में फंस जाएंगे, उत्तर दिया, ''पहिले ने'' (मत्ती 21:31ख)।

दृष्टांत में, पहला पुत्र जिसने कहा था, ''मैं नहीं जाऊंगा'' परन्तु बाद में उसने अपने पिता की आज्ञा मानी, साधारण लोगों, विशेषतया उनका, जिन्हें फरीसियों ने ''महसूल लेने वालों और पापियों'' (मत्ती 9:11) के रूप में वर्गीकृत किया था, को दर्शाता था। बीते समय में, इन ''पापियों'' को परमेश्वर के मार्ग में चलने का अधिकार नहीं था; परन्तु जब उन्होंने यूहन्ना और यीशु का प्रचार सुना, तो उन्होंने मन फिराया। दूसरी ओर, दूसरा पुत्र, जिसने कहा था कि ''मैं जाऊंगा'' परन्तु उसने अपने पिता की आज्ञा नहीं मानी, वह इन धार्मिक अगुओं का प्रतिनिधित्व करता था, जिन्होंने परमेश्वर के साथ की गई वचनबद्धता को पूरा नहीं किया था।

यीशु ने यह प्रासंगिकता बनाई:

> मैं तुम से सच कहता हूं, कि महसूल लेने वाले और वेश्या तुम से पहिले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं।[15] क्योंकि यूहन्ना धर्म के मार्ग से तुम्हारे पास आया,

> और तुम ने उसकी प्रतीति न की:[16] पर महसूल लेने वालों और वेश्याओं ने उस की प्रतीति की: और तुम यह देखकर पीछे भी न पछताए कि उस की प्रतीति कर लेते (मत्ती 21:31ग, 32)।

अपने शत्रुओं को बेनकाब करने के लिए दृष्टांत के यीशु के मुख्य उद्देश्य के अलावा इससे कई व्यावहारिक सबक लिए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए यह ''मन फिराव'' शब्द के अर्थ का श्रेष्ठ उदाहरण है: आयत 29 में अनुवादित यूनानी शब्द ''पछता कर'' और आयत 32 में ''पछताए'' एक ही शब्द के रूप हैं, जिसका अनुवाद ''मन फिराना'' होता है। हमने कहा है कि ''मन फिराव'' के लिए यूनानी शब्द का अनुवाद ''मन का बदलना'' हो सकता है।[17] NIV बाइबल में आयत 29 का अनुवाद इस प्रकार है: ''[पहले पुत्र ने] उत्तर दिया, 'मैं नहीं जाऊंगा,' परन्तु बाद में *उसने अपना मन बदला* और चला गया।'' लोग जब मन फिराते या पश्चात्ताप करते हैं, तो वे पाप के प्रति अपने मन बदल लेते हैं। वे परमेश्वर को ''न'' कहना छोड़कर उसकी इच्छा पूरी करने लगते हैं। दो पुत्रों का दृष्टांत समझना आसान है, परन्तु इस सच्चाई को समझाने के लिए गम्भीर उदाहरण है। शायद इस दृष्टांत का सबसे महत्वपूर्ण सबक सही पुत्र होने की बात के बारे में है: पिता की चापलूसी करना काफ़ी नहीं है (यह कहकर कि ''हजूर, मैं जाऊंगा''); हमें वही *करना* चाहिए, जो पिता हमसे करने के लिए कहता है (देखें मत्ती 7:21; लूका 6:46)। परमेश्वर आज भी अपनी पसन्द के लिए मजदूरों को बुला रहा है (देखें मत्ती 9:36)। यदि हमें घर से बाहर और दाख की बारी में जाने के लिए मन फिराना आवश्यक है, तो आइए हम अभी मन फिरा लें।

जवाबदेही पर सबक
(मत्ती 21:33-46; मरकुस 12:1-12; लूका 20:9-19)

फिर यीशु ने एक दृष्टांत बताया, जिससे पता चला कि धार्मिक अगुवे किस प्रकार धनवान होने और अपनी शान बढ़ाने के लिए अपनी गद्दियों का इस्तेमाल करते हैं। दृष्टांत में, उसे मारने के उनके खतरनाक इरादे भी उजागर हुए।

प्रश्न

''वह लोगों से[18] यह दृष्टांत कहने लगा'' (लूका 20:9क)। ''एक और दृष्टांत सुनो: एक गृहस्थ था, जिसने दाख की बारी लगाई; और उसके चारों ओर बाड़ा बान्धा; और उसमें रस का कुंड खोदा और एक गुम्मट बनाया'' (मत्ती 21:33क)। दृष्टांत में उस समय होने वाली सामान्य बातें थीं: दाख की बारी के इर्द-गिर्द उसकी रक्षा के लिए बाड़ा (दीवार) बनाया जाता था। ''अंगूर का रस निकालने वाली मशीन'' ऊपर नीचे चट्टान में खोदे गए टब के आकार के दो कुण्ड होते थे। अंगूर ऊपरी कुण्ड में रखकर लताड़े जाते थे, जिनका रस निचले कुण्ड में गिरता था, जहां से उसे बाहर निकाल लिया जाता था। गुम्मट

एक चबूतरा होता था, जहां चोरों से दाख की बारी का बचाव करने के लिए चौकीदार होते थे। इन बातों को विस्तार से बताने का कोई ''गहरा अर्थ'' नहीं है; ये ''केवल दृष्टांत के लिए'' हैं।[19]

फिर गृहस्थ ''किसानों को [दाख की बारी] का ठेका देकर परदेश चला गया'' (मत्ती 21:33ख)। आम तौर पर बाहर जाने वाले मालिक अपनी सम्पत्ति किसानों के हाथ सौंप देते थे, जो उनकी भूमि पर खेतीबाड़ी करते थे। इस मालिक ने अपने ठेकेदारों के साथ उपज बांटने का प्रबन्ध किया: उन्होंने उसे उपज का कुछ विशेष हिस्सा देना था (मरकुस 12:2)। उपज में भागीदार देश के प्रमुख अगुवे थे। इन लोगों पर इस बात की ज़िम्मेदारी थी कि परमेश्वर की मीरास के साथ कैसे व्यवहार (या दुर्व्यवहार) करते हैं। लूका के वृत्तांत के अनुसार, मालिक ''*बहुत दिनों के लिए* परदेश चला गया'' (लूका 20:9)। ठहराए हुए अगुवे कई सदियों तक परमेश्वर की दाख की बारी अर्थात इस्राएल के लिए ज़िम्मेदार थे।[20]

''जब फल का समय निकट आया'' (मत्ती 21:34क), तो मालिक ...

> ... ने किसानों के पास एक दास को भेजा कि किसान से दाख की बारी के फलों का भाग ले। पर उन्होंने उसे पकड़कर पीटा और छूछे हाथ लौटा दिया। फिर उस ने एक और दास को उन के पास भेजा और उन्होंने उसका सिर फोड़ डाला[21] और उसका अपमान किया। फिर उस ने एक और को भेजा, और उन्होंने उसे मार डाला: तब उस ने और बहुतों को भेजा: उन में से उन्होंने कितनों को पीटा, और कितनों को मार डाला (मरकुस 12:2-5)।

ज़मीदार के सेवकों के साथ यह नृशंस व्यवहार परमेश्वर के नबियों के साथ दुर्व्यवहार का संकेत था। उन्हें साधारण अर्थ में यहूदी कौम और विशेष अर्थ में यहूदी अगुओं द्वारा सताया गया था (नहेमायाह 9:26; यिर्मयाह 7:25, 26; मत्ती 23:34; प्रेरितों 7:52; इब्रानियों 11:36-38)।

हैरान ज़मीदार ने कहा, ''मैं क्या करूं? मैं अपने प्रिय पुत्र को भेजूंगा, क्या जाने वे उसका आदर करें'' (लूका 20:13क); ''अब एक ही रह गया था, जो उसका प्रिय पुत्र था'' (मरकुस 12:6क)। *निश्चय ही* वे उसके पुत्र का सम्मान करेंगे (मरकुस 12:6ख); यह समझ से बाहर था कि उन्होंने उसका सम्मान नहीं किया। इसलिए ''अन्त में उस ने उसे भी उन के पास भेजा'' (मरकुस 12:6ग)। ''प्रिय पुत्र'' वाक्यांश कहानी में इस पात्र की पहचान आसान बना देता है; पुत्र स्वयं यीशु ही है (मत्ती 17:5; लूका 3:22)।

''परन्तु किसानों ने पुत्र को देखकर आपस में कहा, 'यह तो वारिस है, आओ इसे मार डालें और इसकी मीरास ले लें' '' (मत्ती 21:38)। यह स्पष्ट कारण हमें अजीब लगता है; परन्तु कुछ विद्वानों के अनुसार, ''यहूदी नियम के अनुसार किसी वारिस द्वारा सम्पत्ति के किसी टुकड़े का हक न जताने पर वह टुकड़ा किसी का भी घोषित किया जा सकता था।''[22]

ठेकेदारों के पास वह भूमि इतने समय से थी कि उन्होंने अपने आप को ही इसका मालिक समझ लिया था। इसी प्रकार, यहूदी पुरोहिततन्त्र यह भूल गया था कि वे परमेश्वर के सेवक हैं, जिन्हें उसकी इच्छा पूरी करने का काम सौंपा गया था, परन्तु वे तो यह समझ बैठे थे कि इस्राएली कौम उनकी ही जागीर है।

दृष्टांत में, किसानों ने अपनी खतरनाक योजना को अन्जाम दिया: ''उन्होंने [पुत्र को] पकड़ा और दाख की बारी से बाहर निकालकर मार डाला'' (मत्ती 21:39)। कुछ ही दिनों में मसीह को यरूशलेम नगर के बाहर ले जाकर क्रूस पर चढ़ाया जाना था (देखें इब्रानियों 13:12)।

यीशु एक और प्रश्न पूछने को तैयार था। उसने अपने सुनने वालों से पूछा, ''इसलिए जब दाख की बारी का स्वामी आएगा, तो उन किसानों के साथ क्या करेगा?'' (मत्ती 21:40)।

उत्तर

यह एक और आसान प्रश्न था, जिसका उत्तर दिया जाना था। उन्होंने उत्तर दिया, ''वह उन बुरे लोगों को बुरी रीति से नाश करेगा; और दाख की बारी का ठेका और किसानों को देगा, जो समय पर उसे फल दिया करेंगे'' (मत्ती 21:41)।

फिर मसीह ने उनके उत्तर में पाई जाने वाली सच्चाई बताई: ''इसलिए मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा; और ऐसी जाति को जो उसका फल[23] लाए, दिया जाएगा'' (मत्ती 21:43)। आयत 41 में ''और किसानों'' और आयत 43 में ''ऐसी जाति'' अन्यजातियों को कहा गया है। यहूदियों द्वारा सुसमाचार को ठुकरा देने पर परमेश्वर के दूतों ने अन्यजातियों की ओर मुंह कर लेना था (प्रेरितों 13:46; 18:6)। यीशु के सुनने वालों ने मसीह के शब्द पूरी तरह से नहीं समझे थे, परन्तु वे इतना अवश्य समझ गए थे कि उनके देश के भयंकर भविष्य की भविष्यवाणी की गई है। वे पुकार उठे, ''परमेश्वर करे ऐसा न हो!'' (लूका 20:16)।[24]

यह दुख की बात *होनी थी,* क्योंकि परमेश्वर के ''किसानों'' (यहुदी अगुओं) ने ही उसके पुत्र को मारने की ठान रखी थी। यह होने के प्रमाण के रूप में, मसीह ने मसीहा से सम्बन्धित एक प्रसिद्ध भजन, भजन संहिता 118 से उद्धृत किया: ''जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरे का पत्थर हो गया?'' (मत्ती 21:42क)। यहूदी शिक्षकों और अगुओं के मन में पहले से भरा हुआ था कि मसीहा कोई शाही सैनिक अगुआ होगा। यह उदाहरण उन मूर्ख मिस्त्रियों का था, जिन्होंने उसी पत्थर को, जो भवन (राज्य) को बनाने के लिए आवश्यक था, फैंक दिया।[25]

''कोने के सिरे का पत्थर'' ठुकराने वालों का क्या होगा? मसीह ने कहा, ''जो इस पत्थर पर गिरेगा, वह चकनाचूर हो जाएगा: और जिस पर वह गिरेगा, उसको पीस डालेगा'' (मत्ती 21:44)। ''जैसे पत्थर पर गिरा कोई बर्तन टूट जाता है और जैसे गिरने वाले पत्थर के नीचे आने वाली चीज पिस जाती है, वैसे ही उसे ठुकराने वालों के साथ

यीशु मसीह ने करना था।''[26]

यीशु के मित्रों को उसके हर दृष्टांत की समझ नहीं आती थी (लूका 8:9); परन्तु, इस बार उसके शत्रुओं को भी इसकी प्रासंगिकता बनाने में कठिनाई नहीं हुई: ''महायाजक और फरीसी उसके दृष्टांतों को सुनकर समझ गए, कि वह हमारे विषय में ही कहता है'' (मत्ती 21:45)। हो सकता है कि उन्हें सभी बातें समझ न आई हों, परन्तु वे कम से कम इतना तो जानते थे कि ये कहानियां उन्हीं की ओर इशारा करती हैं और किसी भी तरह उनकी सराहना नहीं की गई है। उनकी घृणा बढ़ती गई, उन्होंने ''उसे पकड़ना चाहा'' (लूका 20:19क)। परन्तु एक बार फिर वे उन लोगों से डर गए[27] जो ''उसे भविष्यवक्ता मानते थे'' (मत्ती 21:46)।

सराहना और तैयारी पर सबक (मत्ती 22:1-14)

फिर यीशु ने अपना तीसरा दृष्टांत यानी राजा के पुत्र के विवाह के भोज का दृष्टांत कहा। यह कई सप्ताह पूर्व बताए गए मसीह के बड़े भोज के दृष्टांत जैसा ही है (लूका 14:16-24), परन्तु कुछ भिन्नताएं हैं। पहला दृष्टांत राज्य के लोग होने के परमेश्वर के निमन्त्रण को ठुकराने की मूर्खता पर था।[28] इस दृष्टांत का मुख्य उद्देश्य यहूदी पुरोहिततन्त्र की बुराई को उजागर करना और उनके कामों के गम्भीर परिणामों को दिखाना है। यह दृष्टांत असामान्य है, क्योंकि यह एक दोहरा दृष्टांत है: पहला भाग यीशु के शत्रुओं के लिए था, परन्तु दूसरे भाग में यीशु के अनुयायियों के लिए सबक था।

सराहना पर सबक

दृष्टांत के पहले भाग में, एक राजा ''ने अपने पुत्र का ब्याह किया'' (मत्ती 22:2)। इसमें राजा परमेश्वर है, पुत्र यीशु और विवाह का भोज मसीहा के राज्य की असंख्य आशिषें हैं।[29]

जब भोज तैयार हो गया, तो राजा ने आमन्त्रित अतिथियों को बुलाने के लिए अपने सेवकों को भेजा (आयतें 3, 4)। आमन्त्रित अतिथि सामान्य तौर पर ''धार्मिक'' यहूदी और विशेषकर यहूदी अगुवे थे। कुछ मेहमानों ने निमन्त्रण को नज़रअन्दाज कर दिया, जबकि दूसरों ने सेवकों के साथ दुर्व्यवहार करके उन्हें मार डाला (आयतें 3, 5, 6)। दुष्ट किसानों के दृष्टांतों की तरह, यहूदी अगुओं ने परमेश्वर के दूतों अर्थात नबियों के साथ ऐसा ही किया था।

इस उत्तर से ''राजा ने क्रोध किया, और अपनी सेना भेजकर उन हत्यारों को नाश किया, और उन के नगर को फूंक दिया'' (आयत 7)। टीकाकार सामान्यतया इस बात से सहमत होते हैं कि इन शब्दों में यीशु ने 70 ईस्वी के यरूशलेम के विनाश की भविष्यवाणी की थी।[30] इस विषय को मत्ती 24 अध्याय में बाद में विस्तार दिया जाएगा। यह मानते हुए कि विद्वान सही हैं, ध्यान दें कि मसीह ने यरूशलेम को ''मेरा नगर'' या ''हमारा नगर'' के बजाय ''उनके नगर'' कहा। एक कौम के रूप में यीशु को ठुकराकर न तो यहूदी

(यूहन्ना 1:11), परमेश्वर के चुने हुए लोग रहे (रोमियों 2:28, 29; 10:12; गलातियों 3:28; प्रकाशितवाक्य 2:9; 3:9) और न यरूशलेम ही ''परमेश्वर का नगर'' रहा।

फिर राजा ने अपने सेवकों को हर जगह जाकर अपनी दावत में सब लोगों को बुलाने के लिए कहा (मत्ती 22:8, 9)। दूतों ''ने सड़कों पर जाकर क्या बुरे, क्या भले, जितने मिले, सबको इकट्ठा किया और विवाह का घर अतिथियों से भर गया'' (आयत 10)। ''भले और बुरे'' ''महसूल लेने वाले और पापी'' (मत्ती 9:11), जिन्होंने ''आनन्द से उसकी सुनी'' (मरकुस 12:37) और लगभग हर अन्यजाति (मत्ती 21:43) इसमें शामिल थे। एक बार फिर, यीशु ने ऊंचे स्थानों पर बैठे हुए यहूदी अगुओं की ओर संकेत किया कि उन्हें ठुकरा दिया जाएगा, क्योंकि उन्होंने उसे ठुकराया, जबकि ''साधारण'' लोगों को जिन्होंने उसे ग्रहण करना था, ग्रहण किया गया।

तैयारी में सबक

वृत्तांत के दूसरे भाग में, जब राजा भोज वाले कमरे में आया, तो उसने एक आदमी को विवाह वाले वस्त्र न पहने हुए पाया (आयत 11) उसने उस आदमी को डांटा और उसे धक्के मारकर वहां से बाहर निकलवा दिया (आयतें 12, 13)। बहुत से लोग कहानी के इस भाग से परेशान हो जाते हैं। कुछ लोग विरोध करते हैं कि किसी को ''केवल अच्छे कपड़े न होने के कारण'' इस प्रकार डांटना अनुचित है। एफ़. एफ़. ब्रूस ने *द हार्ड सेइंग्ज़ ऑफ़ जीज़स* पर अपनी पुस्तक में मत्ती 22:11–14 को शामिल किया है।[31] ब्रूस ने व्याख्या की है कि हम हर परिस्थिति से परिचित नहीं हैं, परन्तु ''यह संकेत कि उस आदमी ने उचित वस्त्र नहीं पहने हुए थे, जबकि वह उचित वस्त्र पहनकर आ *सकता* था। जब उसे अपनी असफलता [के बारे में पूछा गया] तो उसके पास कोई बहाना नहीं था; उसका 'मुंह बन्द' था।''[32]

उस समय और अब के यीशु के हर सुनने वाले के लिए यह सबक है कि परमेश्वर की आशिषें हमारी शर्तों के अनुसार नहीं, बल्कि उसी की शर्तों के अनुसार मिल सकती हैं। मसीह ने निष्कर्ष निकाला, ''क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत परन्तु चुने हुए थोड़े हैं'' (आयत 14)। भोज में बुलाए हुओं और वास्तव में भोज का आनन्द लेने वालों में बहुत अन्तर है। हमें परमेश्वर की इच्छा पूरी करके भोज के लिए तैयारी करनी आवश्यक है (देखें इब्रानियों 5:9; 2 तीमुथियुस 2:21)।

कर्ज़व्यों पर सबक
(मत्ती 22:15-22; मरकुस 12:13-17; लूका 20:20-26)

यीशु के तीन दृष्टांतों से हाकिमों के चेहरे नंगे हो गए थे, जिस कारण वे उसे नष्ट करने के लिए पहले से भी ज्यादा दृढ़ संकल्प हो गए। अब हम उस दिन के विवाद के अगले चरण अर्थात उसके शत्रुओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों की शृंखला पर आते हैं, जो उसे फंसाने के लिए तैयार किए गए थे।

प्रश्न

पहला प्रश्न फरीसियों द्वारा पूछा गया था। मत्ती के वृत्तांत में कहा गया है कि ''फरीसियों ने जाकर आपस में विचार किया, कि उस को किस प्रकार बातों में फंसाएं'' (मत्ती 22:15; मरकुस 12:13)। लूका के वृत्तांत के अनुसार, ''वे उस की ताक में लगे और भेदिए भेजे, कि धर्म का भेष धरकर उस की कोई न कोई बात पकड़ें, कि उसे हाकिम के हाथ और अधिकार में सौंप दें'' (लूका 20:20)।[33]

अपनी योजना के एक भाग के रूप में, फरीसियों ने ''अपने चेलों को ... उसके पास ... भेजा'' (मत्ती 22:16क)। ये ''चेले'' ''उनके गम्भीर छात्रों का समूह'' होंगे,[34] जो अपने शिक्षकों द्वारा सावधानीपूर्वक सिखाए गए नौजवान[35] थे।

बाइबल के अगले शब्द चौंकाने वाले लगते हैं: ''हेरोदियों के साथ'' (मत्ती 22:16ख)। फरीसी हेरोदियों से घृणा करते थे, जो हेरोदेस के शासन का समर्थन करते थे और इस प्रकार वे रोमियों का समर्थन करते थे, जिनकी ओर से हेरोदेस को सत्ता मिली थी।[36] परन्तु वही फरीसी यीशु से उनसे भी अधिक घृणा करते थे। वे *किसी भी* ऐसे व्यक्ति से हाथ मिलाने को तैयार थे, जो मसीह को मरवाने में उनका साथ दे।[37] इस अवसर पर फरीसियों और हेरोदियों में समझौते का कारण कहानी में आगे स्पष्ट होगा।

जोशीला प्रतिनिधिमण्डल यीशु के पास पहुंचा, इस उम्मीद से कि मसीह नरम पड़ जाएगा, चापलूसी करते हुए उन्होंने बात आरम्भ की:[38] ''हे गुरु; हम जानते हैं, कि तू सच्चा है; और परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाता है; और किसी की परख नहीं करता, क्योंकि तू मनुष्यों का मुंह देखकर बातें नहीं करता'' (मत्ती 22:16ग)। फिर उन्होंने मसीह द्वारा कहे गए शब्दों को दोहराते हुए (मत्ती 21:28क) कहा, ''इसलिए हमें बता तू क्या समझता है?'' (मत्ती 22:17क)। उनकी हर बात उसे उत्तर देने पर विवश करने के लिए एक सोची-समझी चाल थी।

वे अपना जाल डालने को तैयार थे। उन्होंने पूछा, ''कैसर को कर देना उचित है,[39] कि नहीं?'' (मत्ती 22:17ख)। यहूदियों को हर साल अपनी अधीनता को स्वीकार करने के बदले में रोम को कर के रूप में बहुत बड़ी राशि देनी पड़ती थी। यहूदी लोग अपने ऊपर लगे विदेशी करों से घृणा करते थे,[40] और उन्हें चुंगी या महसूल से विशेष घृणा थी। महसूल के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''poll'' पुराने अंग्रेज़ी शब्द से निकला है, जिसका अर्थ ''सिर'' है। यह सिर का कर था, अर्थात किसी विशेष क्षेत्र में रहने वाले लोगों की संख्या के आधार पर लगाया गया कर था।[41] इसमें ''14 से 65 वर्ष के प्रत्येक वयस्क को एक दीनार'' देना आवश्यक था।[42]

पहले, यीशु ने सभा के सदस्यों से एक प्रश्न पूछा था, जिससे वे दुविधा में पड़ गए थे। फरीसियों ने यही ढंग इस्तेमाल करने का फैसला किया। उन्हें लगा कि मसीह महसूल के प्रश्न पर अपने उत्तर में फंस जाएगा। यदि वह कहता, ''हां, चुंगी दो'' तो फरीसी लोग उसे रोमी दमनकारियों का समर्थक कहकर दोषी ठहरा सकते थे। यदि वह उत्तर देता, ''नहीं'' तो हेरोदेसी, जो फरीसियों के साथ आए थे, उसकी रिपोर्ट बिगाड़कर रोमी राज्यपाल को दे देते।[43] एक उत्तर से लोग उसके विरुद्ध हो जाते, जबकि दूसरे उत्तर से उसे सरकारी अधिकारियों के प्रति बेईमान दिखाया जाता।

उत्तर

यदि वे मुझसे प्रश्न पूछते तो मैं हकलाकर सभा के सदस्यों को उत्तर देता: ''मैं नहीं जानता'' (देखें मत्ती 21:27)। परन्तु यीशु इतनी जल्दी हार मानने वाला नहीं था। उसने ''उनकी दुष्टता जानकर कहा, हे कपटियो; मुझे क्यों परखते हो?'' (मत्ती 22:18)।

प्रभु ने उन्हें सबक सिखाने का फैसला लिया। उसने जवानों से कहा, ''कर का सिक्का मुझे दिखाओ'' (मत्ती 22:19क)। अपने प्रश्न का उत्तर सुनकर वे हैरान हो गए होंगे, परन्तु उनके पास दीनार था,[44] जो कर अदा करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक रोमी सिक्का था–और उन्होंने वह सिक्का उसे दे दिया (मत्ती 22:19ख)।

उस सिक्के को हाथ में लेकर उसे देखते हुए, मसीह ने पूछा, ''यह मूर्ति और नाम किस का है?'' (मत्ती 22:20)। दीनार प्रचलन में सबसे आम रोमी सिक्का था।[45] सिक्के पर ''आकृति'' छपी होती थी, जो सम्राट तिब्रयुस का चित्र था। उस पर ''अंकित'' था:

TICAESARDIVIAVGFAVGVSTVS

यह *Ti(berius) Caesar, Divi Aug(usti) f(ilius) Augustus* का संक्षिप्त रूप था, जिसका अर्थ है ''दैवीय अगस्तुस का पुत्र तिबरियुस कैसर अगस्तुत।''[46] इसलिए उन्होंने उत्तर दिया, ''कैसर का'' (मत्ती 22:21क)।

फिर मसीह के अक्सर कहे जाने वाले श्रेष्ठ शब्द मिले: ''... जो कैसर का है, वह कैसर को; और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो'' (मत्ती 22:21ख)। वह सिक्का कैसर द्वारा जारी किया गया था, इसलिए कैसर का ही था।[47] यानी मसीह ने कहा कि ''सम्राट की सम्पत्ति उसे लौटाने में कोई बुराई नहीं है।'' दूसरी ओर कुछ चीज़ें विशेष तौर पर परमेश्वर की सम्पत्ति थीं (और हैं) उदाहरण के लिए आराधना का अधिकार।[48] इसे केवल परमेश्वर को ही दिया जाना चाहिए। इस प्रकार मसीह ने दिखाया कि मूल सरकारी दायित्वों को पूरा करना[49] परमेश्वर के प्रति पूर्ण निष्ठा में रुकावट नहीं है। उसने संकेत दिया कि उसके प्रश्न पूछने वाले दोनों कर्त्तव्य निभा सकते हैं और उन्हें निभाने भी चाहिए।

युवा विद्वान ''लोगों के साम्हने उस बात को पकड़ न सके'' (लूका 20:26क)। वे साफ़ तौर पर ''उसके उत्तर से अचम्भित'' थे (लूका 20:26ख; देखें मत्ती 22:22क)। फरीसियों ने मसीह को बदनाम कर दिया होगा, सो उनके चेले उसके चातुर्य पर स्तब्ध थे। चुप होकर (लूका 20:26ग), वे ''उसे छोड़कर चले गए'' (मत्ती 22:22ख)।

सारांश

''प्रश्नों का बड़ा दिन'' का हमारा अध्ययन अगले पाठ में जारी रहेगा, परन्तु हम काफ़ी कुछ देख चुके हैं, जिससे आपको समझ आ सकती है कि उन चौबीस घण्टों के अन्त में, यीशु क्यों कह सका होगा, ''क्या दिन है!'' उसके शत्रु भी दुखी होकर ''*क्या* दिन है'' कहने के लिए विवश हुए होंगे। फरीसियों के चेलों की तरह, यह पढ़कर कि मसीह

ने कैसे उस विशेष मंगलवार को अपने शत्रुओं का सामना किया होगा, मैं हमेशा ''अचम्भित'' होता हूं।

मैं नहीं जानता कि आपका दिन कैसा बीत रहा है, परन्तु मुझे आशा है कि आप ''*क्या* दिन है'' कहने के बजाय ''क्या दिन है!'' कह सकते हैं। जब तक हम यह समझते हैं कि परमेश्वर हमारे साथ है, हमें भजन लिखने वाले के साथ कहना चाहिए, ''आज वह दिन है, जो यहोवा ने बनाया है; हम इसमें मगन और आनन्दित हों'' (भजन संहिता 118:24)।

नोट्स

इस पाठ के हर भाग में प्रचार की काफ़ी सम्भावनाएं हैं: सभा का प्रश्न ''किस अधिकार से?'' धर्म में अधिकार के महत्वपूर्ण विषय के परिचय के लिए हो सकता है (*द ग्रेटेस्ट क्वेशचन्स ऑफ़ द एजस,*[50] 31 में लिरॉय ब्राउनलो द्वारा चर्चा की गई)। ''स्वर्ग की ओर से या मनुष्यों की ओर से?'' के यीशु के प्रश्न को बाइबल के परमेश्वर की प्रेरणा से होने के सकारात्मक प्रचार या कई धार्मिक प्रथाओं के आरम्भ पर नकारात्मक प्रचार करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है (ब्राउनलो, 111)। दो पुत्रों का दृष्टांत मन फिराओ, सामान्य रूप में पुत्रत्व पर या विशेष तौर पर मसीही ज़िम्मेदारी पर बात करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

टिप्पणियां

[1]यदि इस पाठ का इस्तेमाल क्लास के रूप में होता है, तो क्लास के सदस्यों को यह बताने के लिए कि उनका दिन कैसा रहा, कुछ समय देना उपयुक्त होगा। [2]मसीह की सेवकाई में एक और व्यस्त दिन पर विवरण के लिए, ''मसीह का जीवन, भाग 2'' में पृष्ठ 152 पर ''एक व्यस्त दिन'' पाठ में देखें। [3]इस दिन में इतनी घटनाएं हैं कि कइयों ने यह निर्णय लिया है कि वे यह नहीं बता सकते कि एक दिन में क्या-क्या हुआ। उन्हें लगता है कि यरूशलेम के विनाश और न्याय पर अपनी शिक्षा के द्वारा मसीह के बारे में यीशु के प्रश्न (''वह किसका पुत्र है?'') से होने वाली घटनाएं बुधवार सुबह हुईं। अपनी रूपरेखा में, हम इन सभी घटनाओं को मंगलवार के दिन रख रहे हैं, परन्तु इसका महत्व नहीं है। [4]यह मानने पर कि सभी घटनाएं मंगलवार के दिन हुईं (पिछली टिप्पणी देखें), शायद इस दिन प्रभु के जीवन के किसी भी अन्य एक दिन की घटनाओं में सबसे अधिक घटनाएं लिखी गई हैं। [5]इस पाठ का अधिकतर भाग यीशु के शत्रुओं के लिए तो था, परन्तु उसे आस-पास की भीड़ ने भी सुना था (देखें लूका 20:9, 16)। यह शिक्षा हमारे लिए सम्भालकर रखी गई है, क्योंकि इसमें हमारे लिए भी सबक हैं। [6]वह अन्यजातियों के आंगन में सिखा रहा होगा, शायद सुलैमान के ओसारे में (देखें यूहन्ना 10:23; प्रेरितों 3:11)। ''मसीह का जीवन, भाग 1'' में पृष्ठ 102 पर मन्दिर का रेखाचित्र देखें। [7]''सुसमाचार'' शब्द का अर्थ है ''शुभ समाचार।'' इस अवसर पर सुनाया गया ''सुसमाचार'' सम्भवतया यह शुभ समाचार था कि राज्य का आना निकट है (मरकुस 1:15)। [8]उनके दृष्टिकोण से विजयी प्रवेश ''शोर शराबे वाला प्रदर्शन'' होगा। मन्दिर के शुद्ध करने और विजयी प्रवेश के बारे में, पुस्तक में पहले आए पाठ ''खोए गए अवसर'' में देखें। [9]जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टर्डैर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 586. [10]यीशु के बारे में यूहन्ना की गवाही

पर अतिरिक्त हवालों के लिए, देखें यूहन्ना 1:6, 7, 15, 36; 3:26-36; 10:40-42.

[11]उस मंगलवार को यीशु ने कई दृष्टांत बताए। इन दृष्टांतों को कई बार ''दृष्टांतों का तीसरा बड़ा समूह'' कहा जाता है। [12]जैसा कि पहले कई बार कहा गया है, सुसमाचार के वृत्तांतों में ''दृष्टांत'' का इस्तेमाल कई अलंकारों के लिए किया गया। [13]कई प्राचीन लेखों में किस पुत्र ने आज्ञा मानी और किस पुत्र ने आज्ञा तोड़ी के क्रम को उलटा किया जाता है। इससे संदेश पर कोई असर नहीं पड़ता। [14]यीशु ने यूहन्ना पर विश्वास न करने का उत्तर देने वालों पर आरोप लगाया (मत्ती 21:32)। फिर प्रश्न मुख्यतया धार्मिक अगुओं के लिए होगा (मत्ती 21:25), न कि भीड़ के लिए जो यूहन्ना को बड़ा सम्मान देती थी (मत्ती 21:26)। निश्चय ही, और भी लोग वहां थे, जिन्होंने यीशु के बारे में यूहन्ना की बात पर पूर्ण विश्वास नहीं किया था, सो अधिक सामान्य प्रासंगिकता भी बनाई जा सकती है। [15]''तुम से पहले'' का अर्थ यह नहीं कि यहूदी अगुवे राज्य में शामिल उन लागों के पीछे *अपने आप* चले जाने थे। यदि वे कभी राज्य में प्रवेश करते भी, तो यह चुंगी लेने वालों और (पूर्व) वेश्याओं की तरह उसी आधार पर होने थे, उन्हें यीशु में विश्वास करना और अपने पापों से मन फिराना आवश्यक था। [16]भीड़ के भड़क उठने के डर से (मत्ती 21:25, 26) उन्होंने यह मानने से इनकार कर दिया था कि वे यूहन्ना पर विश्वास करते हैं, परन्तु यीशु ने यूहन्ना में उनके विश्वास की कमी दिखा दी। [17]मन फिराव पर, ''उद्धार को समझना'' पुस्तक में पृष्ठ 34 पर देखें। [18]यहूदी अगुवे अभी भी वहीं थे (मत्ती 21:45)। [19]मैक्गार्वे एण्ड पैंडलटन, 591. [20]मत्ती 21:33 में यीशु ने यशायाह 5:1, 2 से उद्धृत किया, जो इस्राएल जाति की बात है।

[21]मत्ती के वृत्तांत में, एक दास को पथराव किया गया था (मत्ती 21:35)। वाल्टर डब्ल्यू. वेसल एण्ड विलियम एल. लेन, नोट्स ऑन बुक ऑफ़ मार्क, द NIV *स्टडी बाइबल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडवरन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 1518. [23]''फल'' = परमेश्वर द्वारा स्वीकृत जीवन का ''परिणाम'' (यूहन्ना 15:1-10; रोमियों 7:4; गलातियों 5:22, 23)। [24]''परमेश्वर करे ऐसा न हो!'' यूनानी का सही अनुवाद है, परन्तु इसमें उन शब्दों में मिलने वाले जोश की कमी है। मैक्गार्वे ने इसे ''परमेश्वर न करे'' की ''अर्ध-लौकिक अभिव्यक्ति'' कहा है (मैक्गार्वे एण्ड पैंडलटन, 593)। ऐसा नहीं है कि कोई विवेकी यहूदी परमेश्वर के नाम को इतना हल्के से लेता। ''परमेश्वर करे ऐसा न हो!'' अभिव्यक्ति में खून की कमी, पर शायद यही सबसे बेहतर है। [25]यह भविष्यवाणी आरम्भिक कलीसिया की पसन्दीदा बन गई (प्रेरितों 4:11; रोमियों 9:33; 1 पतरस 2:7)। [26]लुईस फोस्टर, नोट्स ऑन द बुक ऑफ़ लूक, द NIV *स्टडी बाइबल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडवरन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 1579. [27]मैक्गार्वे ने सुझाव दिया है कि वहां उपस्थित कुछ लोग ''यीशु के लिए तलवारें निकालने को तैयार दिलेर गलीली'' होंगे (मैक्गार्वे एण्ड पैंडलटन, 595)। [28]उस दृष्टांत पर संक्षेप में चर्चा के लिए, ''मसीह का जीवन, भाग 4'' में पृष्ठ 153 पर ''मुझे कहानी सुनाओ'' पाठ देखें। [29]इस दृष्टांत पर विस्तृत चर्चा के लिए, पृष्ठ 119 पर ''राजा का निमन्त्रण'' पाठ देखें। [30]इसे सही मानते हुए, यह दिलचस्प है कि दृष्टांत में राजा ने *अपनी* सेना को भेजा, जबकि यरूशलेम का विनाश *रोमी* सेना ने किया था। पुराना नियम सिखाता है कि परमेश्वर ने कई बार *अपने* उद्देश्यों को पूरा करने के लिए *दुष्ट* शक्तियों (जैसे अश्शूर या बाबुल) का इस्तेमाल किया है (देखें यशायाह 10:5; 13:5; यिर्मयाह 25:9; यहेजकेल 29:17-20)।

[31]एफ़. एफ़. ब्रूस, द *हार्ड सेइंग्स ऑफ़ जीज़स* (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इन्टरवर्सिटी प्रैस, 1983), 206-7. [32]वहीं, 207. [33]निश्चय ही अन्त में उन्होंने यही किया। उस समय रोमी राज्यपाल पुन्तियुस पिलातुस था। [34]ए. टी. रॉबर्ट्सन, *ए हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स फ़ॉर स्टूडेंट्स ऑफ़ द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* (न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड रोअ, 1950), 164. [35]एच. आई. हेस्टर, द *हार्ट ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* (लिबर्टी, मिज़ोरी: क्वालिटी प्रैस, 1963), 193; मैक्गार्वे एण्ड पैंडलटन, 597. [36]हेरोदियों पर संक्षिप्त नोट्स के लिए, ''मसीह का जीवन, भाग 1'' में पृष्ठ 74 पर देखें। [37]फरीसियों और हेरोदियों के बीच षड्यन्त्र रचने का एक हवाला पहले आया था: मरकुस 3:6. मरकुस 3:6 पर टिप्पणियों के लिए, ''मसीह का जीवन, भाग 2'' में पृष्ठ 54 पर देखें। [38]जो बातें उन्होंने कहीं, बेशक सच थीं, पर उनके मुंह में चापलूसी थी (1) क्योंकि उन्होंने उन पर विश्वास नहीं किया था और (2) उनका ये बातें कहने का उद्देश्य घटिया था (देखें मत्ती 22:18)। [39]मूल में ''कैसर''

जूलियस सीज़र या कैसर को कहा गया है, परन्तु यह किसी रोमी शासक का पदनाम नहीं था।[40]विल एड वारेन के अनुसार ''यरूशलेम के विनाश का कुछ कारण करों का भुगतान भी था'' (विल एड वारेन, क्लास सिलेबस, *द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट: द सिनोप्टिक गॉस्पल्स,* हार्डिंग यूनिवर्सिटी, 1991, 91)।

[41]यूनानी शब्द का अनुवाद ''कर,'' ''लोगों के विवरण'' के आधार पर लगाया गया ''कर'' था (द *अनैलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* [लंदन: सैमुएल बैगस्टर एण्ड सन्स लि., 1971], 230)।[42]वारेन, 91. [43]बाद में जब यीशु को पिलातुस के सामने लाया गया था, तो उस पर ''कैसर को कर देने से मना'' करने का अरोप लगाया गया था (लूका 23:2), परन्तु सुनवाइयों में स्पष्टतया इस झूठे आरोप को सिद्ध नहीं किया जा सका था।[44]यह तथ्य कि वे ''दीनार उसके पास *लाए*'' संकेत दे सकता है कि उनके पास पहले से नहीं था। मैं इस दृश्य की कल्पना कर सकता हूं कि हर कोई यह पूछते हुए कि ''क्या तुम्हारे पास दीनार है?'' ''नहीं, तुम्हारे पास है?'' अपने थैलों में से ढूंढ़ता है।[45]जैसे पहले कई बार बताया गया है, दीनार साधारण मज़दूर की एक दिन की मज़दूरी होती थी (मत्ती 20:2, 9)।[46]यह भी लिखा हो सकता है ''तिबरियुस कैसर, दैव्य अगस्तुस का अगस्त [महान] पुत्र।'' इसकी अधिकतर जानकारी मैक्गर्वे एण्ड पैंडलटन, 599 से ली गई है।[47]आम तौर पर हर देश में सरकार द्वारा जारी मुद्रा का इस्तेमाल किया जाता है और वह सरकार की सम्पत्ति होती है।[48]यीशु के शब्दों में उसमें लिखे मूर्तिपूजक दावों (''दैवीय अगस्तुस'') का स्पष्ट विरोध था। सिक्के पर कैसर का चित्र था और यह उसे दिया जा सकता था, परन्तु हम *परमेश्वर* के स्वरूप पर बनाए गए हैं (उत्पत्ति 1:26, 27) और *हमें* उसी को समर्पित होना चाहिए।[49]नागरिक सरकार के प्रति मसीही व्यक्ति की ज़िम्मेदारियों पर मुख्य आयतें रोमियों 13:1-7; 1 तीमुथियुस 2:1, 2; तीमुस 3:1, 2; 1 पतरस 2:13-17 हैं।[50]लिरोय ब्राउनलो, *द ग्रेटेस्ट क्वेश्चन्स ऑफ़ द एजस* (फ़ोर्ट वर्थ, टैक्सस: ब्राउनलो पब्लिकेशंस, 1956)।